शोध पत्र-इतिहास

लार्ड लारेन्स और उसके शासनकाल में अपनायी गयी उत्तर–पश्चिमी सीमा नीति (1864 ई. से 1869 ई.)

* डॉ. सुनिता सिन्हा

December,2012

* सहायक परीक्षा नियंत्रक, भगवन्त विश्वविद्यालय, अजमेर

ykM ykjsUl ¼1864 bZ- ls 1869 bZ-½ tc Hkkjr esa okbljk; fu;qDr gksdj vk;s rc mÙkj&if'pe lhekvksa ds çfr fuEukafdr uhfrxr mís'; viuk;s x;s %¼v½ vQxkfuLrku ds lUnHkZ esa vgLr{ksi dh uhfr viukbZ xbZA
¼c½ ykM ykjsUl dk çeq[k mís'; Fkk fd og ns'k ds vkUrfjd ekeyksa esa rc rd gLr{ksi ugha djuk pkgrk Fkk tc rd dksbZ vU; 'kfDr ml ns'k esa gLr{ksi djus dk ç;Ru ugha djsA ykjsUl Hkkjrh; eqlyekuksa esa :l ds f[kykQ Hkkoukvksa dks HkM+dkuk pkgrk FkkA mldh uhfr iw.kZ fuf"Ø;rk dh ugha Fkh] og lqfopkfjr vkSj rdZlaxr FkhA ifjofrZr ifjfLFkfr;ksa ds vuq:i <kydj bl uhfr vkSj fopkj/kkjk dk vuqlj.k fyVu ds vkus ls iwoZ rd gksrk jgkA dkcqy esa ykjsUl us lg;ksxkRed uhfr dk viuk;kA lejdan] cq[kkjk dks Hkh lfud vfHk;ku }kjk viuk v/khu fd;kA bl rjg Li"V gksrk gS fd ykjsUl us mÙkj&if'peh lhek çkUrksa ds çfr vgLr{ksi] lg;ksx] fe=rk rFkk rdZlaxr uhfr dks viukrs gq, ogka viuk çHkko cuk;s j[kkA

लार्ड लारेन्स ने जनवरी, 1964 में भारत में वायसराय का पद ग्रहण किया। 1857 की क्रांति के समय वह पंजाब में नियुक्त था। फरवरी, 1859 में वह इंग्लैण्ड चला गया। वहाँ इण्डिया ऑफिस में उसे राज्य–परिषद सचिव के पद पर नियुक्त कर भारत का "त्राणकर्त्ता" तथा विजय का संयोजक कहकर सम्मानित किया गया। इसका प्रमुख कारण पंजाब के सिक्खों को अपने नियंत्रण में रखना था।[1]

लार्ड लारेन्स भारत में वायसराय नियुक्त होने से पूर्व 1849 ई. में चीफ कमिश्नर नियुक्त किया गया था। इसका कारण यह रहा कि पंजाब में शांति व्यवस्था, सुरक्षा एवं सुव्यवस्थापूर्ण वातावरण को बनाए रखने हेतु लारेन्स जैसे शान्तिप्रिय, अहस्तक्षेप नीति में विश्वास करने वाले राजनीतिज्ञ की आवश्यकता थी।[2]

लार्ड लारेन्स जब भारत में 1864 ई. में वायसराय नियुक्त होकर आए उस समय उत्तर–पश्चिम सीमाओं के प्रति निम्नांकित नीतिगत उद्देश्य अपनाए गए :–

1. लार्ड लारेन्स ने उत्तर–पश्चिमी सीमाओं में विशेषतः अफगानिस्तान के विशेष सन्दर्भ में अहस्तक्षेप की नीति को अपनाए जाने का निश्चय किया।
2. यदि किसी सीमावर्ती प्रदेश के द्वारा आक्रमण किया जाए अथवा अव्यवस्था, उत्तेजनात्मक गतिविधि की जाए, उसी स्थिति में सैनिक हस्तक्षेप की नीति को अपनाया जाएगा।
3. लार्ड लारेन्स का प्रमुख उद्देश्य था कि वह देश के आन्तरिक मामलों में तब तक हस्तक्षेप नहीं करना चाहता था जब तक कोई अन्य शक्ति उस देश में हस्तक्षेप करने का प्रयत्न न करे।

1863 ई. में उत्तर–पश्चिमी सीमा प्रान्त अफगानिस्तान में उत्तराधिकारी युद्ध, अराजकता, अव्यवस्था एवं विद्रोह का वातावरण निर्मित हुआ था। इस समय अफगानिस्तान में उत्तराधिकारी युद्ध प्रारम्भ हो गया था। [3] इस युद्ध के कारण अन्य पड़ोसी सीमावर्ती इलाकों ने अपने अपने पक्ष में सहयोग व समर्थन एवं हस्तक्षेप की नीति को अपनाया, इस स्थिति में भारत में अंग्रेजी साम्राज्य को हानि हो सकती थी। लेकिन इस परिस्थिति में लार्ड लारेन्स ने उत्तराधिकार के संघर्ष में किसी भी पक्ष का समर्थन करने से इनकार कर दिया।[4] लारेन्स ने इस नीति को समर्थन दिया कि गृहयुद्ध में जो भी विजयी होकर आएगा उसे अफगानिस्तान के अमीर के रूप में स्वीकार कर लिया जाएगा। जो भी काबुल में अपने आपको स्थापित करने में सफल होता उसे स्वीकार किया जाता रहा। इस नीति से गृहयुद्ध तो काफी लंबा हो गया किन्तु सहायता न देकर लारेन्स ने दूसरे उम्मीदवारों द्वारा रूस व फारस से सहायता प्राप्ति की संभावना पर रोक लगा दी। किन्तु शेर अली जब अमीर बना तो उसकी सहायता की प्रार्थना को लारेन्स ने तीन बार ठुकरा दिया था। 1868 ई. में शेर अली ने जब अपनी सत्ता सुस्थिर कर ली तो लारेन्स ने उसे धन व शस्त्र भेजे।[1]

1864 ई. से 1868 ई. में रूसियों ने मध्य एशिया में अपना अग्रगामी साम्राज्यवाद फिर से चालू किया। रूसी भय की पुनरावृत्ति के कारण रालिन्सन भारत मंत्रि परिषद का सदस्य ने अफगानिस्तान के प्रति गतिशील नीति अपनाने का सुझाव दिया तथा क्वेटा, बोलन दर्रा अपने हाथ में लेने की सिफारिश की। अमीर को वार्षिक अनुपूर्ति देने को भी कहा गया। किन्तु लारेन्स को इस नीति में विश्वास न था।[5]

लारेन्स भारतीय मुसलमानों में रूस के खिलाफ भावनाओं को भड़काना चाहता था। लारेन्स ने यह भी कहा कि अफगान अपने प्रथम आक्रामक को चाहे वे अंग्रेज हों या रूसी अपना शत्रु समझेंगे तथा दूसरे को मित्र व मुक्तिदाता। लारेन्स की नीति पूर्ण निष्क्रियता की नहीं थी, वह सुविचारित और तर्कसंगत थी।[6]

लारेन्स ने उत्तर–पश्चिम सीमा के प्रति अगला कदम गजनी प्रदेश की ओर बढ़ाया था। यहाँ के शासक ने लारेन्स की अधीनता को मानने से इन्कार कर दिया था। लारेन्स ने गजनी प्रदेश की ओर सैनिक अभियान किया जिसमें उसे सफलता प्राप्त हुई।[1]लारेन्स ने साम्राज्य का विस्तार करने के उद्देश्य से बाजोर

नामक प्रदेश पर जो कि उत्तर–पश्चिम सीमा का अन्य महत्त्वपूर्ण प्रान्त है, पर अधिकार करने का उद्देश्य बनाया था। लारेन्स के सैनिकों के द्वारा इस प्रदेश में कत्लेआम किया गया और इस अभियान में लारेन्स को पूर्ण सैनिक सफलता प्राप्त हुई थी।

लारेन्स ने अपने शासनकाल के अन्तर्गत उत्तर–पश्चिम के क्षेत्र सेहवान की ओर सैनिक अभियान किया था। सेहवान के शासक शाह हसन ने लारेन्स की अधीनता को मानने से इंकार कर दिया था। लारेन्स ने सेहवान प्रदेश पर संगठित रूप से आक्रमण किया। सेहवान के किले को अंग्रेजी साम्राज्य के प्रभाव में मिला लिया गया।[7]

लारेन्स के द्वारा उत्तर–पश्चिम सीमाओं में साम्राज्य विस्तार की नीति को अपनाया गया था।[8] लारेन्स को उत्तर–पश्चिम सीमाओं के कुछ प्रान्तों पर अधिकार करना बाकी था। इस दृष्टि से लारेन्स ने पेशावर प्रान्त की ओर सैनिक अभियान की नीति को अपनाया। वह पेशावर को अंग्रेजी साम्राज्य में मिलाना और वहाँ अंग्रेजी प्रभाव को स्थापित करना चाहता था। लारेन्स ने पेशावर प्रान्त में सैनिक डेरे डालकर किलेबन्दी की, फिर किले पर आक्रमण किया। इस अभियान में लारेन्स को सफलता प्राप्त हुई।[9]

पेशावर विजय के पश्चात् लारेन्स ने रोहितास के किले के विरूद्ध आक्रमक नीति को अपनाया था। लारेन्स ने रोहितास के किले पर सफलतापूर्वक आक्रमण किया जिसमें कि उसको बिना किसी कठिनाई के सफलता प्राप्त हुई।[10]

fu"d"kl

इस तरह स्पष्ट होता है कि लॉरेन्स ने उत्तर–पश्चिमी सीमा प्रान्तों के प्रति अहस्तक्षेप, सहयोग, मित्रता तथा तर्कसंगत नीति को अपनाते हुए वहाँ अपना प्रभाव बनाये रखा।

संदर्भ ग्रंथ

1 भारतीय राष्ट्रीय पुरातत्व अभिलेखागार, नई दिल्ली : *"सीक्रेट फाइल"* पृ. 13,शर्मा, पावा : *"आधुनिक भारत का इतिहास"* पृ. 382, सिविनसन्स ऑर्थर: *"नॉर्थ वेस्ट फ्रन्टियर"* पृ. 40.

2 भारतीय राष्ट्रीय पुरातत्व अभिलेखागार, नई दिल्ली : *"सीक्रेट फाइल"* पृ. 13, एस. गोपाल : *"ब्रिटिश पॉलिसी ऑफ इण्डिया 1858–1905"* पृ. 69,डेविस सी.सी.: *"नॉर्थ वेस्ट फ्रन्टियर"* पृ. 83, शुक्ल आर.एल. : *"आधुनिक भारत का इतिहास"* पृ. 302, महाजन विद्याधर व महाजन सावित्री : *"भारत 1526 के आगे"* पृ. 366,मजूमदार, दत्त, रायचौधरी : *"भारत का वृहत् इतिहास"* पृ. 119.

3 भारतीय राष्ट्रीय पुरातत्व अभिलेखागार, नई दिल्ली : *"सीक्रेट फाइल"* पृ. 13, शर्मा, पावा : *आधुनिक भारत का इतिहास"* पृ. 382, सिविनसन्स आर्थर : *नॉर्थ वेस्ट फ्रन्टियर"* पृ. 40.

4. भारतीय राष्ट्रीय पुरातत्व अभिलेखागार, नई दिल्ली : *"सीक्रेट फाइल"* पृ. 13, गोपाल एस. : *"ब्रिटिश पॉलिसी ऑफ इण्डिया 1858–1905"* पृ. 69, डेविस सी.सी. : *"नॉर्थ वेस्ट फ्रन्टियर"* पृ. 83, शुक्ल आर.एल. : *"आधुनिक भारत का इतिहास"* पृ. 302, महाजन विद्याधर व महाजन सावित्री : *"भारत का वृहत् इतिहास"* पृ. 119, सरकार सुमित : *"आधुनिक भारत"* पृ. 126.

5 भारतीय राष्ट्रीय पुरातत्व अभिलेखागार, नई दिल्ली : *"सीक्रेट फाइल"* पृ. 13, सिविनसन्स आर्थर : *"नॉर्थ वेस्ट फ्रन्टियर"* पृ. 40.

6 भारतीय राष्ट्रीय पुरातत्व अभिलेखागार, नई दिल्ली : *"सीक्रेट फाइल"* पृ. 13, गोपाल एस. : *"ब्रिटिश पॉलिसी ऑफ इण्डिया 1858–1905"* पृ. 69, डेविस सी.सी. : *"नॉर्थ वेस्ट फ्रन्टियर"* पृ. 83, शुक्ल आर.एल. : *"भारत 1526 के आगे"* पृ. 366, मजूमदार, दत्त, रायचौधरी : *"भारत का वृहत् इतिहास"* पृ. 119, सरकार सुमित : *"आधुनिक भारत"* पृ. 126.